International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 2, February 2020 |

जायसी कृत पद्मावत में प्रेम तत्व

ज्योति कुमारी

सहायक आचार्य, हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़, अलवर

सार

पद्मावत हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत सूफी परम्परा का प्रसिद्ध महाकाव्य है।[1] इसके रचनाकार मलिक मोहम्मद जायसी हैं।[2] दोहा और चौपाई छन्द में लिखे गए इस महाकाव्य की भाषा अवधी है।[3]

यह हिन्दी की अवधी बोली में है और चौपाई, दोहों में लिखी गई है। चौपाई की प्रत्येक सात अर्धालियों के बाद दोहा आता है और इस प्रकार आए हुए दोहों की संख्या 653 है।

इसकी रचना सन् 947 हिजरी. (संवत् 1540) में हुई थी। इसकी कुछ प्रतियों में रचनातिथि 927 हि. मिलती है, किंतु वह असंभव है। अन्य कारणों के अतिरिक्त इस असंभावना का सबसे बड़ा कारण यह है कि मलिक साहब का जन्म ही 900 या 906 हिजरी में हुआ था। ग्रंथ के प्रारंभ में शाहेवक्त के रूप में शेरशाह की प्रशंसा है, यह तथ्य भी 947 हि. को ही रचनातिथि प्रमाणित करता है। 927 हि. में शेरशाह का इतिहास में कोई स्थान नहीं था।

परिचय

जायसी सूफी संत थे और इस रचना में उन्होंने नायक रतनसेन और नायिका पद्मिनी की प्रेमकथा को विस्तारपूर्वक कहते हुए प्रेम की साधना का संदेश दिया है। रतनसेन ऐतिहासिक व्यक्ति है, वह चित्तौड़ का राजा है, पद्मावती उसकी वह रानी है जिसके सौंदर्य की प्रशंसा सुनकर तत्कालीन सुल्तान अलाउद्दीन उसे प्राप्त करने के लिये चित्तौड़ पर आक्रमण करता है और यद्यपि युद्ध में विजय प्राप्त करता है तथापि पद्मावती के जल मरने के कारण उसे नहीं प्राप्त कर पाता है। इसी अर्ध ऐतिहासिक कथा के पूर्व रतनसेन द्वारा पदमावती के प्राप्त किए जाने की व्यवस्था जोड़ी गई है, जिसका आधार अवधी क्षेत्र में प्रचलित हीरामन सुग्गे की एक लोककथा है। कथा संक्षेप में इस प्रकार है :[1,2]

हीरामन की कथा

सिंहल द्वीप (श्रीलंका) का राजा गंधर्वसेन था, जिसकी कन्या पदमावती थी, जो पद्मिनी थी। उसने एक सुग्गा पाल रखा था, जिसका नाम हीरामन था। एक दिन पदमावती की अनुपस्थिति में बिल्ली के आक्रमण से बचकर वह सुग्गा भाग निकला और एक बहिलिए के द्वारा फँसा लिया गया। उस बहेलिए से उसे एक ब्राह्मण ने मोल ले लिया, जिसने चित्तौड़ आकर उसे वहाँ के राजा रतनसिंह राजपूत के हाथ बेच दिया। इसी सुग्गे से राजा ने पद्मिनी (पदमावती) के अद्‌भुत सौंदर्य का वर्णन सुना, तो उसे प्राप्त करन के लिये योगी बनकर निकल पड़ा।

अनेक वनों और समुद्रों को पार करके वह सिंहल पहुँचा। उसके साथ में वह सुग्गा भी था। सुग्गे के द्वारा उसने पदमावती के पास अपना प्रेमसंदेश भेजा। पदमावती जब उससे मिलने के लिये एक देवालय में आई, उसको देखकर वह मूर्छित हो गया और पदमावती उसको अचेत छोड़कर चली गई। चेत में आने पर रतनसेन बहुत दु:खी हुआ। जाते समय पदमावती ने उसके हृदय पर चंदन से यह लिख दिया था कि उसे वह तब पा सकेगा जब वह सात आकाशों (जैसे ऊँचे) सिंहलगढ़ पर चढ़कर आएगा। अत: उसने सुग्गे के बताए हुए गुप्त मार्ग से सिंहलगढ़ के भीतर प्रवेश किया। राजा को जब यह सूचना मिली तो उसने रतनसेन को शूली देने का आदेश दिया किंतु जब हीरामन से रतनसिंह राजपूत के बारे में उसे यथार्थ तथ्य ज्ञात हुआ, उसने पदमावती का विवाह उसके साथ कर दिया।

रतनसिंह पहले से ही विवाहित था और उसकी उस विवाहिता रानी का नाम नागमती था। रतनसेन के विरह में उसने बारह महीने कष्ट झेल कर किसी प्रकार एक पक्षी के द्वारा अपनी विरहगाथा रतनसिंह के पास भिजवाई और इस विरहगाथा से द्रवित होकर रतनसिंह पदमावती को लेकर चित्तौड़ लौट आया।

यहाँ, उसकी सभा में राघव नाम का एक तांत्रिक था, जो असत्य भाषण के कारण रतनसिंह द्वारा निष्कासित होकर तत्कालीन सुल्तान अलाउद्दीन की सेवा में जा पहुँचा और जिसने उससे पदमावती के सौंदर्य की बड़ी प्रशंसा की। अलाउद्दीन पदमावती के अद्‌भुत सौंदर्य का वर्णन सुनकर उसको प्राप्त करने के लिये लालायित हो उठा और उसने इसी उद्देश्य से चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। दीर्घ काल तक उसने चित्तौड़ पर घेरा डाल रखा, किंतु कोई सफलता होती उसे न दिखाई पड़ी, इसलिये उसने धोखे से रतनसिंह राजपूत को बंदी करने का उपाय किया। उसने उसके पास संधि का संदेश भेजा, जिसे रतन सिंह ने स्वीकार कर अलाउद्दीन को विदा करने के लिये गढ़ के बाहर निकला, अलाउद्दीन ने उसे बंदी कर दिल्ली की ओर प्रस्थान कर दिया।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 2, February 2020 |

चित्तौड़ में पदमावती अत्यंत दु:खी हुई और अपने पति को मुक्त कराने के लिये वह अपने सामंतों गोरा तथा बादल के घर गई। गोरा बादल ने रतनसिह को मुक्त कराने का बीड़ा लिया। उन्होंने सोलह सौ डोलियाँ सजाईं जिनके भीतर राजपूत सैनिकों को रखा और दिल्ली की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचकर उन्होंने यह कहलाया कि पद्मावती अपनी चेरियों के साथ सुल्तान की सेवा में आई है और अंतिम बार अपने पति रतनसेन से मिलने के लिय आज्ञा चाहती है। सुल्तान ने आज्ञा दे दी। डोलियों में बैठे हुए राजपूतों ने रतनसिंह को बेड़ियों से मुक्त किया और वे उसे लेकर निकल भागे। सुल्तानी सेना ने उनका पीछा किया, किंतु रतन सिंह सुरक्षित रूप में चित्तौड़ पहुँच ही गया।[3,4]

जिस समय वह दिल्ली में बंदी था, कुंभलनेर के राजा देवपाल ने पदमावती के पास एक दूत भेजकर उससे प्रेमप्रस्ताव किया था। रतन सिंह से मिलने पर जब पदमावती ने उसे यह घटना सुनाई, वह चित्तौड़ से निकल पड़ा और कुंभलनेर जा पहुँचा। वहाँ उसने देवपाल को द्वंद्व युद्ध के लिए ललकारा। उस युद्ध में वह देवपाल की सेल से बुरी तरह आहत हुआ और यद्यपि वह उसको मारकर चित्तौड़ लौटा किंतु देवपाल की सेल के घाव से घर पहुँचते ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। पदमावती और नागमती ने उसके शव के साथ चितारोहण किया। अलाउद्दीन भी रतनसिंह राजपूत का पीछा करता हुआ चित्तौड़ पहुँचा, किंतु उसे पदमावती न मिलकर उसकी चिता की राख ही मिली।

इस कथा में जायसी ने इतिहास और कल्पना, लौकिक और अलौकिक का ऐसा सुंदर सम्मिश्रण किया है कि हिंदी साहित्य में दूसरी कथा इन गुणों में "पदमावत" की ऊँचाई तक नहीं पहुँच सकी है। प्राय: यह विवाद रहा है कि इसमें कवि ने किसी रूपक को भी निभाने का यत्न किया है। रचना के कुछ संस्करणों में एक छंद भी आता है, जिसमें संपूर्ण कथा को एक आध्यात्मिक रूपक बताया गया है और कहा गया है कि चित्तौड़ मानव का शरीर है, राजा उसका मन है, सिंहल उसका हृदय है, पदमिनी उसकी बुद्धि है, सुग्गा उसका गुरु है, नागमती उसका लौकिक जीवन है, राघव शैतान है और अलाउद्दीन माया है; इस प्रकार कथा का अर्थ समझना चाहिए। किंतु यह छंद रचना की कुछ ही प्रतियों में मिलता है और वे प्रतियाँ भी ऐसी ही हैं जो रचना की पाठपरंपरा में बहुत नीचे आती है। इसके अतिरिक्त यह कुंजी रचना भर में हर जगह काम भी नहीं देती है : उदाहरणार्थ गुरु-चेला-संबंध सुग्गे और रतनसेन में ही नहीं है, वह रचना के भिन्न भिन्न प्रसंगों में रतनसेन-पदमावती, पदमावती-रतनसेन और रतनसेन तथा उसके साथ के उन कुमारों के बीच भी कहा गया है जो उसके साथ सिंहल जाते हैं। वस्तुत: इसी से नहीं, इस प्रकार की किसी कुंजी के द्वारा भी कठिनाई हल नहीं होती है और उसका कारण यही है कि किसी रूपक के निर्वाह का पूरी रचना में यत्न किया ही नहीं गया है। जायसी का अभीष्ट केवल प्रेम का निरूपण करना ज्ञात होता है। वे स्थूल रूप में प्रेम के दो चित्र प्रस्तुत-करते हैं : एक तो वह जो आध्यात्मिक साधन के रूप में आता है, जिसके लिये प्राणों का उत्सर्ग भी हँसते हँसते किया जा सकता है; रतनसेन और पदमावती का प्रेम इसी प्रकार का है : रतनसेन पदमावती को पाने के लिये सिंहलगढ़ में प्रवेश करता है और शूली पर चढ़ने के लिये हँसते हँसते आगे बढ़ता है; पदमावती रतनसेन के शव के साथ हँसते हँसते चितारोहण करती है और अलाउद्दीन जैसे महान सुल्तान की प्रेयसी बनने का लोभ भी अस्वीकार कर देती है। दूसरा प्रेम वह है जो अलाउद्दीन पदमावती से करता है। दूसरे की विवाहिता पत्नी को वह अपने भौतिक बल से प्राप्त करना चाहता है। किंतु जायसी प्रथम प्रकार के प्रेम की विजय और दूसरे प्रकार के प्रेम की पराजय दिखाते हैं। दूसरा उनकी दृष्टि में हेय और केवल वासना है; प्रेम पहला ही है। जायसी इस प्रेम को दिव्य कहते हैं।[5,6]

पद्मावत में उपसंहार समेत ५८ अध्याय हैं। इनके नाम हैं- स्तुति खंड, सिंहलद्वीप वर्णन खंड, जन्म खंड, मानसरोदक खंड, सुआ खंड, रत्नसेन जन्म खंड, बनिजारा खंड,

नागमती सुआ खंड, राजा सुआ संवाद खंड, नखशिख खंड, प्रेम खंड, जोगी खंड, राजा गनपति संवाद खंड, बोहित खंड, सात समुद्र खंड, सिंहल द्वीप खंड, मंडप गमन खंड, पद्मावती वियोग खंड, पद्मावती सुआ भेट खंड, वसंत खंड, राजा रत्नसेन सती खंड, पार्वती महेश खंड, राजा गढ़ छेका खंड, गन्धर्व सेन मंत्री खंड, रत्नसेन सूली खंड, रत्नसेन पद्मावती विवाह खंड, पद्मावती रत्नसेन भेंट खंड, रत्नसेन साथी खंड, षट्ऋतु वर्णन खंड, नागमती वियोग खंड।

विचार-विमर्श

मलिक मुहम्मद जायसी (1492-1548) हिन्दी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा के कवि थे।[1] वे अत्यंत उच्चकोटि के सरल और उदार सूफ़ी महात्मा थे। जायसी मलिक वंश के थे। मिस्र में सेनापति या प्रधानमंत्री को मलिक कहते थे। दिल्ली सल्तनत में खिलजी वंश राज्यकाल में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने चाचा को मरवाने के लिए बहुत से मलिकों को नियुक्त किया था जिसके कारण यह नाम उस काल से काफी प्रचलित हो गया था। इरान में मलिक जमींदार को कहा जाता था व इनके पूर्वज वहां के निगलाम प्रान्त से आये थे और वहीं से उनके पूर्वजों की पदवी मलिक थी। मलिक मुहम्मद जायसी के वंशज अशरफी खानदान के चेले थे और मलिक कहलाते थे।[7,8] फिरोज शाह तुगलक के अनुसार बारह हजार सेना के रिसालदार को मलिक कहा जाता था।[2] जायसी ने शेख बुरहान और सैयद अशरफ का अपने गुरुओं के रूप में उल्लेख किया है। जायसी का जन्म सन 1492 ई के आसपास माना जाता है। वे उत्तर प्रदेश के जायस नामक स्थान के रहनेवाले थे।[3] उनके नाम में जायसी शब्द का प्रयोग, उनके उपनाम की भांति, किया जाता है। यह भी इस बात को सूचित करता है कि वे जायस नगर के निवासी थे। इस संबंध में उनका स्वयं भी कहना है-

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 2, February 2020 |

जायस नगर मोर अस्थानू।
नगरक नांव आदि उदयानू।
तहां देवस दस पहुने आएऊं।
भा वैराग बहुत सुख पाएऊं॥ [4]

इससे यह पता चलता है कि उस नगर का प्राचीन नाम उदयान था, वहां वे एक पहुने जैसे दस दिनों के लिए आए थे, अर्थात उन्होंने अपना नश्वर जीवन प्रारंभ किया था अथवा जन्म लिया था और फिर वैराग्य हो जाने पर वहां उन्हें बहुत सुख मिला था। जायस नाम का एक नगर उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले में आज भी वर्तमान है, जिसका एक पुराना नाम उद्याननगर 'उद्यानगर या उज्जालिक नगर' बतलाया जाता है तथा उसके कंचाना खुर्द नामक मुहल्ले में मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म-स्थान होना भी कहा जाता है।[2] कुछ लोगों की धारणा कि जायसी की किसी उपलब्ध रचना के अंतर्गत उसकी निश्चित जन्म-तिथि अथवा जन्म-संवत का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं पाया जाता। एक स्थल पर वे कहते हैं,

भा अवतार मोर नौ सदी।
तीस बरिख ऊपर कवि बदी॥ [5]

जिसके आधार पर केवल इतना ही अनुमान किया जा सकता है कि उनका जन्म संभवतः ८०० हि० एवं ९०० हि० के मध्य, तदनुसार सन १३९७ ई० और १४९४ ई० के बीच किसी समय हुआ होगा तथा तीस वर्ष की अवस्था पा चुकने पर उन्होंने काव्य-रचना का प्रारंभ किया होगा। पद्मावत का रचनाकाल उन्होंने ९४७ हि० [6] अर्थात १५४० ई० बतलाया है। पद्मावत के अंतिम अंश (६५३) के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि उसे लिखते समय तक वे वृद्ध हो चुके थे।

उनके पिता का नाम मलिक राजे अशरफ़ बताया जाता है और कहा जाता है कि वे मामूली ज़मींदार थे और खेती करते थे। स्वयं जायसी का भी खेती करके जीविका-निर्वाह करना प्रसिद्ध है। जायसी ने अपनी कुछ रचनाओं में अपनी गुरु-परंपरा का भी उल्लेख किया है। उनका कहना है, सैयद अशरफ़, जो एक प्रिय संत थे मेरे लिए उज्ज्वल पंथ के प्रदर्शक बने और उन्होंने प्रेम का दीपक जलाकर मेरा हृदय निर्मल कर दिया।। जायसी कुरुप व काने थे थे। एक मान्यता अनुसार वे जन्म से ऐसे ही थे किन्तु अधिकतर लोगों का मत है कि शीतला रोग के कारण उनका शरीर विकृत हो गया था। अपने काने होने का उल्लेख जायसी ने स्वयं ही इस प्रकार किया है - एक नयन कवि मुहम्मद गुनी। अब उनकी दाहिनी या बाईं कौन सी आंख फूटी थी, इस बारे में उन्हीं के इस दोहे को सन्दर्भ लिया जा सकता है:

मुहमद बाईं दिसि तजा, एक सरवन एक आँखि।

इसके अनुसार यह भी प्रतीति होती है कि उन्हें बाएँ कान से भी उन्हें कम सुनाई पड़ता था। जायस में एक कथा सुनने को मिलती है कि जायसी एक बार जब शेरशाह के दरबार में गए तो वह इन्हें देखकर हँस पड़ा। तब इन्होंने शांत भाव से पूछा - मोहिका हससि, कि कोहरहि? यानि तू मुझ पर हँसा या उस कुम्हार (ईश्वर) पर? तब शेरशाह ने लज्जित हो कर क्षमा माँगी। एक अन्य मान्यता अनुसार वे शेरशाह के दरबार में नहीं गए थे, बल्कि शेरशाह ही उनका नाम सुन कर उनके पास आया था। [7]

स्थानीय मान्यतानुसार जायसी के पुत्र दुर्घटना में मकान के नीचे दब कर मारे गए जिसके फलस्वरूप जायसी संसार से विरक्त हो गए और कुछ दिनों में घर छोड़ कर यहां वहां फकीर की भांति घूमने लगे। अमेठी के राजा रामसिंह उन्हें बहुत मानते थे। अपने अंतिम दिनों में जायसी अमेठी से कुछ दूर एक घने जंगल में रहा करते थे। लोग बताते हैं कि अंतिम समय निकट आने पर उन्होंने अमेठी के राजा से कह दिया कि मैं किसी शिकारी के तीर से ही मरूँगा जिस पर राजा ने आसपास के जंगलों में शिकार की मनाही कर दी। जिस जंगल में जायसी रहते थे, उसमें एक शिकारी को एक बड़ा बाघ दिखाई पड़ा। उसने डर कर उस पर गोली चला दी। पास जा कर देखा तो बाघ के स्थान पर जायसी मरे पड़े थे। जायसी कभी कभी योगबल से इस प्रकार के रूप धारण कर लिया करते थे।[7] काजी नसरुद्दीन हुसैन जायसी ने, जिन्हें अवध के नवाब शुजाउद्दौला से सनद मिली थी, मलिक मुहम्मद का मृत्युकाल रज्जब ९४९ हिजरी (सन् १५४२ ई.) बताया है। इसके अनुसार उनका देहावसान ४९ वर्ष से भी कम अवस्था में सिद्ध होता है किन्तु जायसी ने 'पद्मावत' के उपसंहार में वृद्धावस्था का जो वर्णन किया है वह स्वत: अनुभूत - प्रतीत होता है। जायसी की कब्र अमेठी के राजा के वर्तमान महल से लगभग तीन-चैथाई मील के लगभग है। यह वर्तमान किला जायसी के मरने के बहुत बाद बना है। [9,10]अमेठी के राजाओं का पुराना किला जायसी की कब्र से डेढ़ कोस की दूरी पर था। अत: यह धारणा प्रचलित है कि अमेठी के राजा को जायसी की दुआ से पुत्र हुआ और उन्होंने अपने किले के समीप ही उनकी कब्र बनवाई, निराधार है। इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि अमेठी नरेश इनके संरक्षक थे। एक अन्य मान्यता अनुसार उनका देहांत १५५८ में हुआ।

परिणाम

पद्मावत 2018 की भारतीय हिंदी भाषा की ऐतिहासिक ड्रामा फिल्म है, जो संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित है। मलिक मुहम्मद जायसी की इसी नाम की महाकाव्य कविता पर आधारित, इसमें दीपिका पादुकोण ने रानी पद्मावती की, जो एक राजपूत रानी है जो

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 2, February 2020 |

अपनी सुंदरता के लिए जानी जाती है, महारावल रतन सिंह की पत्नी है, जिसका किरदार शाहिद कपूर ने निभाया है । रणवीर सिंह द्वारा अभिनीत सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी उसकी सुंदरता के बारे में सुनता है और उसे गुलाम बनाने के लिए उसके राज्य पर हमला करता है। अदिति राव हैदरी , जिम सर्भ ,रज़ा मुराद और अनुप्रिया गोयनका ने सहायक भूमिकाएँ निभाईं। [1] [8]

₹ 180 करोड़ (US$26.32 मिलियन) - ₹ 190 करोड़ (US$27.78 मिलियन) के उत्पादन बजट के साथ , पद्मावत अब तक बनी सबसे महंगी भारतीय फिल्मों में से एक है । [4] [5] [6] शुरुआत में 1 दिसंबर 2017 को रिलीज होने वाली इस फिल्म को कई विवादों का सामना करना पड़ा। हिंसक विरोध प्रदर्शन के बीच, इसकी रिलीज़ अनिश्चित काल के लिए विलंबित हो गई। केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड ने बाद में कुछ बदलावों के साथ फिल्म को मंजूरी दे दी, जिसमें कई अस्वीकरण और इसके मूल शीर्षक पद्मावती में बदलाव शामिल है । [9] [10]इसे 25 जनवरी 2018 को 2डी, 3डी और आईमैक्स 3डी फॉर्मेट में रिलीज करने के लिए पुनर्निर्धारित किया गया , जिससे यह आईमैक्स 3डी में रिलीज होने वाली पहली भारतीय फिल्म बन गई। [11]

रिलीज़ होने पर, पद्मावत को मिश्रित-से-सकारात्मक समीक्षा मिली, जिसमें दृश्य, सिनेमैटोग्राफी और सिंह द्वारा दुष्ट खिलजी के चित्रण के लिए प्रशंसा की गई, लेकिन इसकी कहानी, निष्पादन, लंबाई और प्रतिगामी पितृसत्तात्मक रीति-रिवाजों के पालन के लिए आलोचना की गई। [12] आलोचकों ने खिलजी को एक रूढ़िवादी दुष्ट मुस्लिम राजा और रतन सिंह को धर्मी हिंदू राजा के रूप में चित्रित करना भी नापसंद किया, जिसके कारण धार्मिक समुदायों ने विरोध प्रदर्शन किया। [13] [14] [15] [16] [17] [18] [19] भारत के कुछ राज्यों में रिलीज नहीं होने के बावजूद, इसने बॉक्स ऑफिस पर ₹ 585 करोड़ (यूएस $73 मिलियन) से अधिक की कमाई की, जो एक प्रमुख फिल्म बन गई। व्यावसायिक सफलता और 12वीं सबसे अधिक कमाई करने वाली भारतीय फिल्मपूरे समय का। [20] [21]

64वें फिल्मफेयर पुरस्कारों में , पद्मावत को सर्वश्रेष्ठ फिल्म , सर्वश्रेष्ठ निर्देशक (भंसाली के लिए दोनों), सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री (पादुकोण) और सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (सिंह) सहित 18 नामांकन प्राप्त हुए , और सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (आलोचक) (सिंह) सहित 4 पुरस्कार जीते।). [22] इसने सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (भंसाली) सहित 3 राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी जीते। [23]

निष्कर्ष

13वीं सदी के अफगानिस्तान में खिलजी शासक जलालुद्दीन खिलजी ने दिल्ली की गद्दी संभालने की योजना बनाई । उसका दुष्ट भतीजा अलाउद्दीन खिलजी [24] जलालुद्दीन की बेटी मेहरुनिसा से शादी के लिए कहता है। उनकी शादी का आयोजन किया जाता है, लेकिन कार्यक्रम की रात, अलाउद्दीन एक अन्य महिला के साथ व्यभिचार करता है। एक वरिष्ठ दरबारी, शरीफ पाशा, इस कृत्य का गवाह बनता है, और अलाउद्दीन द्वारा तुरंत उसे मार दिया जाता है। शादी के दौरान मेहरुनिसा को इस बारे में बताया गया, जिससे वह भयभीत हो गई। शादी होती है, और अलाउद्दीन को जलालुद्दीन की सेना में एक प्रमुख सेनापति के रूप में नियुक्त किया जाता है।

सिंघल (आधुनिक श्रीलंका) में, राजकुमारी पद्मावती ने जंगल में शिकार करते समय गलती से मेवाड़ के राजपूत शासक महारावल रतन सिंह को घायल कर दिया। जैसे ही वह उसका इलाज करती है, वह बताता है कि उसने अपनी एकमात्र पत्नी नागमती के लिए दुर्लभ मोती हासिल करने के लिए सिंहल की यात्रा की है । आख़िरकार, दोनों एक दूसरे के बंधन में बंधते हैं और प्यार में पड़ जाते हैं। रतन सिंह ने पद्मावती से शादी के लिए हाथ मांगा, वह मान गई और अपने पिता की अनुमति से उनकी शादी हो गई।

जलालुद्दीन ने दिल्ली की गद्दी संभाली और मंगोल आक्रमण को विफल करने के लिए अलाउद्दीन को भेजा । अलाउद्दीन ऐसा करने में सफल हो जाता है, लेकिन देवगिरी पर एक अस्वीकृत छापा मारता है । वह वहां की राजकुमारी को पकड़ लेता है और उसे अपनी रखैल बना लेता है । जलालुद्दीन की पत्नी और भतीजे इतात खान ने उसे अलाउद्दीन की गद्दी संभालने की महत्वाकांक्षा के खिलाफ चेतावनी दी। हालाँकि, वह अलाउद्दीन से मिलने के लिए कारा की यात्रा करता है और उसे गुलाम मलिक काफूर उपहार में देता है । अलाउद्दीन ने जलालुद्दीन के मंत्रियों की मलिक काफूर द्वारा हत्या करवा दी , और जलालुद्दीन को अलाउद्दीन के एक सेनापति ने मार डाला। इसके बाद अलाउद्दीन दिल्ली लौट आया और खुद को नया सुल्तान घोषित कर दिया. समय के साथ, अलाउद्दीन और काफूर बहुत करीब आ गए और काफूर अलाउद्दीन की सेना में जनरल बन गया।

पद्मावती रतन सिंह के साथ मेवाड़ की यात्रा करती हैं और उनके शाही पुजारी राघव चेतन उन्हें आशीर्वाद देते हैं। चेतन बाद में गुप्त रूप से महल में घुसपैठ करता है और रतन और पद्मावती के बीच अंतरंग क्षणों की जासूसी करता है, और बाद में उसे भगा दिया जाता है। फिर वह दिल्ली जाता है और अलाउद्दीन को पद्मावती की सुंदरता के बारे में बताता है। अलाउद्दीन, जो कुछ भी असाधारण करने के लिए प्रतिबद्ध है, राजपूतों को दिल्ली आमंत्रित करता है, लेकिन उसका निमंत्रण अस्वीकार कर दिया जाता है। क्रोधित होकर उसने रतन सिंह की राजधानी चित्तौड़ पर घेरा डाल दिया । छह महीने की असफल घेराबंदी के बाद, अलाउद्दीन ने होली के अवसर पर शांति का नाटक कियाऔर उसे चित्तौड़ में प्रवेश करने की अनुमति दी जाती है, जहां उसकी मुलाकात रतन सिंह से होती है। वह पद्मावती को देखने के लिए कहता है; रतन सिंह इस अनुरोध को स्वीकार कर लेते हैं, लेकिन केवल क्षण भर के लिए, जबकि अलाउद्दीन को उसका चेहरा देखने से रोकते हैं। खिलजी ने रतन सिंह को धोखा दिया और उन्हें बंदी बनाकर दिल्ली ले जाया गया।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 2, February 2020 |

रानी नागमती के आग्रह पर, पद्मावती कुछ शर्तों के तहत अलाउद्दीन से मिलने के लिए सहमत हो जाती है: वह पहले रतन से मिलेगी, उनकी मुलाकात के दौरान कोई पुरुष अभिभावक नहीं होगा और चेतन को उसके पहले विश्वासघात के लिए मार डाला जाएगा। अलाउद्दीन सहमत है; फिर पद्मावती उनसे मिलने के लिए दिल्ली जाती हैं। इस बीच, अलाउद्दीन अपने भतीजे द्वारा की गई हत्या की साजिश से बच गया, हालांकि वह घायल हो गया। जब उसका भतीजा उसकी जीत का जश्न मनाने के लिए बिस्तर पर लेटा हुआ उससे मिलने आता है, तो अलाउद्दीन जाग जाता है और उसे मार डालता है।[11,12] सुबह की नमाज के समय, महिलाओं के वेश में राजपूत खिलजी सैनिकों पर घात लगाकर हमला करने की योजना बनाते हैं।. पद्मावती, चित्तौड़ के सेनापतियों, गोरा और बादल के साथ, रतन सिंह को मुक्त कर देती है, और मेहरुनिसा की मदद से भाग जाती है। रतन का सामना अलाउद्दीन से होता है, जो रतन से आग्रह करता है कि वह इस अवसर का लाभ उठाकर उसे उसकी कमजोर अवस्था में मार डाले। हालाँकि, रतन ने मना कर दिया क्योंकि यह घायलों पर हमला न करने की राजपूत परंपरा के खिलाफ है। राजपूतों का घात योजना के अनुसार आगे बढ़ता है, लेकिन खिलजी सैनिक इससे सतर्क हो जाते हैं और हमले को विफल कर देते हैं, और उन राजपूतों को मार डालते हैं जो राजा और रानी को भागने देते हैं।

अलाउद्दीन ने राजपूतों की मदद करने के लिए मेहरुनिसा को कैद कर लिया और चित्तौड़ की ओर मार्च किया। वह और रतन सिंह एक ही द्वंद्व में संलग्न हैं; अलाउद्दीन घायल हो जाता है और अपनी तलवार गिरा देता है, रतन उसे मारने ही वाला होता है कि तभी काफूर मौका पाकर रतन को घातक रूप से घायल कर देता है और उसकी पीठ पर तीरों से हमला कर देता है। मरते समय, वह अलाउद्दीन और उसकी सेना को बेईमानी से लड़ने के लिए डांटता है। बहुत बड़ी खिलजी सेना ने बिखरे हुए राजपूतों को हरा दिया और चित्तौड़ पर कब्जा कर लिया, लेकिन पद्मावती के साथ जौहर (बलिदान द्वारा सामूहिक आत्महत्या) करने वाली राजपूत महिलाओं को पकड़ने में असमर्थ रहे , जिससे अलाउद्दीन की खोज विफल हो गई और वह क्रोधित हो गया।[13]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. '"Padmavat' reminds us that a major casualty of the gory Rajput conflicts were Rajput women". मूल से 25 नवंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 नवंबर 2017.
2. ↑ "कहाँ से आई थीं पद्मावती?". मूल से 25 नवंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 22 नवंबर 2017.
3. ↑ "Absurdity of epic proportions: Are people aware of the content in Jayasi's Padmavat?". मूल से 25 नवंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 27 नवंबर 2017.
4. "पद्मावती ट्रेलर: संजय लीला भंसाली की नई फिल्म भव्य, मंत्रमुग्ध करने वाली और बहुत महंगी लग रही है!" . बिजनेस टुडे । 9 अक्टूबर 2017.7 नवंबर 2017 को मूल सेसंग्रहीत
5. ^ '"पद्मावती' 25 जनवरी को 'पद्मावत' नाम से रिलीज होगी ।" 14 जनवरी 2018।
6. ^ अय्यर, संयुक्ता (7 जनवरी 2018)। "दीपिका पादुकोण, रणवीर सिंह और शाहिद कपूर अभिनीत संजय लीला भंसाली की महान कृति पद्मावत 24 जनवरी को रिलीज़ होगी - मुंबई मिरर -" । मुंबई मिरर । 7 जनवरी 2018 को लिया गया .
7. ^ "दीपिका-रणवीर की 'पद्मावती': बजट डिकोड"। टाइम्स ऑफ इंडिया ।
8. ^ "पद्मावत बॉक्स ऑफिस: संजय लीला भंसाली की महाकाव्य ने पहले सप्ताह में दुनिया भर में 220 करोड़ रुपये कमाए"। हिंदुस्तान टाइम्स । 31 जनवरी 2018। 2 अक्टूबर 2019को लिया गया। यह फिल्म अनुमानित 180 करोड़ रुपये के बजट पर बनाई गई थी।
9. ^ '"पद्मावत" बॉक्स ऑफिस कलेक्शन दिन 22: दीपिका पादुकोण की फिल्म सुपरहिट है। 267 करोड़ कमाता है" । एनडीटीवी । 2 फरवरी 2018 को लिया गया । संजय लीला भंसाली की महान कृति, जो कथित तौर पर ₹ 190 करोड़ के भव्य बजट पर बनाई गई थी।
10. ^ "पद्मावत बॉक्स ऑफिस" । बॉलीवुड हंगामा ।
11. ^ "भंसाली, वायाकॉम18 मोशन पिक्चर्स ने 'पद्मावती' के लिए हाथ मिलाया" । टाइम्स ऑफ इंडिया । 17 जून 2017 को मूल से संग्रहीत । 14 नवंबर 2017 को लिया गया ।
12. ^ "सेंसर बोर्ड चाहता है कि "पद्मावती" का नाम बदलकर "पद्मावत" रखा जाए, फिल्म में 5 बदलाव"। एनडीटीवी। 30 दिसंबर 2017को लिया गया.
13. ^ '"भारत की फिल्म पद्मावती को 'सेंसर ने मंजूरी दे दी"' . बीबीसी समाचार । 30 दिसंबर 2017।